PGCBHT

बांग्ला–हिंदी अनुवाद में स्नातकोत्तर सर्टिफिकेट कार्यक्रम
(पी.जी.सी.बी.एच.टी.)

सत्रीय कार्य
2021

(जनवरी 2021 और जुलाई 2021 सत्रों में
प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)

इग्नू जन-जन का विश्वविद्यालय

अनुवाद अध्ययन और प्रशिक्षण विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदानगढ़ी, नई दिल्ली–110 068

Scanned with CamScanner

बांग्ला–हिंदी अनुवाद में स्नातकोत्तर सर्टिफिकेट कार्यक्रम
(पी.जी.सी.बी.एच.टी.)
सत्रीय कार्य 2021

(जनवरी 2021 और जुलाई 2021 सत्रों में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)

कार्यक्रम कोड : पी.जी.सी.बी.एच.टी.

प्रिय विद्यार्थियो,

जैसा कि 'बांग्ला–हिंदी अनुवाद में स्नातकोत्तर सर्टिफिकेट कार्यक्रम' (पी.सी.बी.एच.टी.) की 'कार्यक्रम दर्शिका' में आपको बताया गया है कि इस अध्ययन कार्यक्रम में पढ़ाई के साथ–साथ आपको कुछ सत्रीय कार्य भी करने हैं। चार पाठ्यक्रमों वाले इस कार्यक्रम के तीन पाठ्यक्रमों के अंतर्गत आपको एक–एक सत्रीय कार्य करना होगा और चौथा पाठ्यक्रम 'अनुवाद परियोजना' से संबंधित है। सत्रीय कार्य आपकी आंतरिक परीक्षा है। अतः इन्हें ध्यानपूर्वक और पूरे परिश्रम के साथ करें। प्रत्येक सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किए गए हैं। प्रत्येक पाठ्यक्रम के सत्रीय कार्य आप अपनी सुविधा के अनुसार अलग–अलग प्रस्तुत कर सकते हैं और एक साथ भी प्रस्तुत कर सकते हैं! सत्रीय कार्य प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि इस प्रकार हैं :

पाठ्यक्रम कोड एवं शीर्षक	प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि	
	जनवरी 2021 में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों के लिए	जुलाई 2021 में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों के लिए
एम.टी.टी.–001 भारतीय भाषाओं में अनुवाद	31.03.2021	30.09.2021
एम.टी.टी.-002 बांग्ला–हिंदी अनुवाद : तुलना और पुनःसृजन	31.03.2021	30.09.2021
एम.टी.टी.–003 बांग्ला–हिंदी के विभिन्न भाषिक क्षेत्रों में अनुवाद	31.03.2021	30.09.2021

उद्देश्य : प्रस्तुत कार्यक्रम के अंतर्गत आपको भारतीय भाषाओं में अनुवाद, बांग्ला–हिंदी अनुवाद : तुलना और पुनःसृजन के साथ–साथ इन भाषाओं के विभिन्न भाषिक क्षेत्रों में अनुवाद का अभ्यास कराया गया है। सत्रीय कार्य का मुख्य उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और उसे कहाँ तक व्यवहार में ला सकते हैं। यानी आपको इस योग्य बनाना है कि अध्ययन के दौरान जो जानकारी आपको प्राप्त हुई है उसे अपने शब्दों में विधिवत प्रस्तुत कर सकें और अनुवाद कार्य में उसे व्यवहार में लाते हुए अच्छा अनुवाद कर सकें।

सत्रीय कार्य करने से पहले कुछ बातें

1) उत्तर के लिए फुलस्केप कागज का ही इस्तेमाल करें।

2) प्रत्येक सत्रीय कार्य के लिए अलग उत्तर–पुस्तिका बनाएँ। इस तरह आपके तीन सत्रीय कार्यों के लिए तीन उत्तर–पुस्तिकाएँ होनी चाहिए।

3) अपनी उत्तर–पुस्तिका के प्रथम पृष्ठ के दाहिने कोने के सबसे ऊपर अपना नामांकन संख्या, पूरा पता लिखें तथा तिथि सहित हस्ताक्षर करें।

Scanned with CamScanner

4) अपनी उत्तर-पुस्तिका के प्रथम पृष्ठ के बाएँ कोने पर कार्यक्रम का शीर्षक, पाठ्यक्रम का कोड, उसका शीर्षक, सत्रीय कार्य कोड तथा अध्ययन केंद्र का नाम/कोड लिखें।

आपका सत्रीय कार्य इस प्रकार आरंभ होना चाहिए :

कार्यक्रम का शीर्षक :	नामांकन संख्या : ....
	नाम : ....
	पता : ....
	....
पाठ्यक्रम कोड :	
पाठ्यक्रम का शीर्षक :	
सत्रीय कार्य कोड :	हस्ताक्षर : ....
अध्ययन केंद्र का नाम :	तिथि : ....

---

5) पाठ्यक्रम के कोड तथा सत्रीय कार्य के कोड सत्रीय कार्य पर मुद्रित होते हैं और वहाँ से देखकर लिखे जा सकते हैं। प्रत्येक उत्तर के पहले प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।

6) अपने उत्तर केवल फुलस्केप कागज पर लिखें और उन्हें अच्छी तरह नत्थी कर दें। बहुत पतले कागज पर न लिखें। बाईं ओर 4 से.मी. का हाशिया छोड़ दें। एक उत्तर और दूसरे उत्तर के बीच कम से कम 4 पंक्तियों का स्थान छोड़ें। ऐसा करने से परीक्षक उचित स्थान पर अपनी टिप्पणी दे पाएँगे।

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

- सत्रीय कार्य में दिए गए निर्देशों के अनुसार उत्तर लिखिए। व्यावहारिक प्रश्नों के उत्तर समुचित कोश का उपयोग करते हुए प्रसंग और संदर्भानुसार देने हैं।

- प्रत्येक सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़ें और उसमें यदि कोई विशेष निर्देश दिए गए हों तो उनका पालन करें। सत्रीय कार्य जिन इकाइयों पर आधारित है, उन्हें पढ़ लें। प्रश्न के संबंध में महत्वपूर्ण बातों को नोट कर लें, फिर उनको व्यवस्थित करके अपने उत्तर की रूपरेखा बनाएँ।

- जब आपको विश्वास हो जाए कि जो उत्तर आप देने जा रहे हैं संतोषजनक हैं, तब उन्हें साफ-साफ लिखें और जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं उन्हें रेखांकित कर दें।

- अनुवाद के व्यावहारिक प्रश्नों को करते समय 'कोश' का भरपूर प्रयोग करें। विषय एवं संदर्भ का विशेष ध्यान रखें। बांग्ला और हिंदी के कथनों की तुलना करें। यह देखें कि अनुवाद से वही अर्थ निकल रहा है जो मूल सामग्री से निकलता है। यह भी सुनिश्चित करें कि आपका अनुवाद लक्ष्य भाषा की उपयुक्त शैली के अनुरूप है, स्रोत भाषा की छाया मात्र नहीं। अनुवाद में मूल लेखन की-सी सहजता लाने के लिए अपनी कल्पनाशीलता और लेखन-क्षमता का उपयोग करें।

- निबंधात्मक प्रश्नों का उत्तर देते समय प्रस्तावना और निष्कर्ष के संबंध में विशेष ध्यान दें। प्रस्तावना संक्षेप में होनी चाहिए। इसमें यह बताएँ कि प्रश्न से आप क्या समझते हैं और आप क्या लिखने जा रहे हैं। निष्कर्ष में आपके उत्तर का सार होना चाहिए। उत्तर सुसंगत और सुसंबद्ध हों। वाक्यों और अनुच्छेदों में परस्पर तालमेल होना चाहिए। उत्तर सत्रीय कार्य में दिए गए प्रश्न से संबद्ध होना चाहिए। यह देख लें कि आपने प्रश्न में निहित सभी मुख्य बातों के उत्तर शामिल किए हैं।

सत्रीय कार्य पूरा करने के बाद यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क) आपके उत्तर तार्किक और सुसंगत हों।

Scanned with CamScanner

ख) वाक्यों और अनुच्छेदों (Paragraphs) के बीच स्पष्ट क्रमबद्धता हो।

ग) उत्तर सही क्रम से लिखे गए हों तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति उत्तर के पूर्णतया अनुकूल हो।

घ) उत्तर प्रश्न में निर्धारित शब्दों से अधिक लंबे न हों।

ङ) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से वर्तनी और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

च) उत्तर अपने हाथ से लिखें। इसे मुद्रित या टाइप न करें। अपने उत्तर को विश्वविद्यालय द्वारा आपके पास भेजी गई इकाइयों से नकल न करें। यदि आप ऐसा करते हैं तो आपको कम अंक मिलेंगे।

छ) अन्य विद्यार्थियों के उत्तरों से नकल न करें, यदि यह पाया जाता है कि आपने नकल की है तो आपके सत्रीय कार्यों को अस्वीकृत कर दिया जाएगा।

ज) प्रत्येक सत्रीय कार्य को अलग–अलग लिखें।

झ) प्रत्येक उत्तर के साथ उसके प्रश्न की संख्या लिखें।

ञ) सत्रीय कार्य को पूरा करके इसे अध्ययन केंद्र के पास भेज दें। अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य की उत्तर–पुस्तिका को किसी भी स्थिति में **मुख्यालय के विद्यार्थी मूल्यांकन प्रभाग को मूल्यांकन के लिए न भेजें।**

ट) अध्ययन केंद्र में सत्रीय कार्य को प्रस्तुत करते समय निर्धारित प्रेषण एवं पावती कार्ड पर अध्ययन केंद्र से (सत्रीय कार्य प्राप्त किए) प्राप्ति दर्ज करा लें।

ठ) यदि आपने क्षेत्र को बदलने के संबंध में निवेदन किया है तो आप अपने सत्रीय कार्यों को अपने पहले के अध्ययन केंद्र में ही तब तक भेजते रहें जब तक विश्वविद्यालय की ओर से आपको क्षेत्रीय केंद्र बदलने की सूचना नहीं भेज दी जाती।

शुभकामनाओं के साथ,

Scanned with CamScanner

भारतीय भाषाओं में अनुवाद (एम.टी.टी–001)
सत्रीय कार्य
(जनवरी 2021 और जुलाई 2021 सत्रों के लिए)

कार्यक्रम कोड : पी.जी.सी.बी.एच.टी.
पाठ्यक्रम कोड : एम.टी.टी.–001
सत्रीय कार्य कोड : एम.टी.टी.–001/एएसटी/(टी.एम.ए.)/2021
पूर्णांक : 100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। लगभग 300 शब्दों में उत्तर दीजिए।

---

1. भाषा–परिवार से आप क्या समझते हैं? भारत के प्रमुख भाषा–परिवारों का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत कीजिए। 10
2. बहुभाषिकता के हानि–लाभ को लेकर बहस के विविध आयामों पर एक निबंध लिखिए। 10
3. बहुभाषिक समाज में अनुवाद के विविध क्षेत्रों पर प्रकाश डालिए। 10
4. भारतीय भाषाओं की शब्दावली में विद्यमान अर्थपरक असमानताओं पर विस्तृत चर्चा कीजिए। 10
5. ध्वनि और वर्ण का अर्थ स्पष्ट करते हुए अनुवाद में वर्णमाला का महत्व सिद्ध कीजिए। 10
6. भारतीय भाषाओं की वाक्य रचना की समानताओं और असमानताओं पर अनुवाद की दृष्टि से विचार कीजिए। 10
7. प्रकृति के आधार पर अनुवाद के विभिन्न प्रकारों का सोदाहरण विवेचन कीजिए। 10
8. 'सामाजिक–सांस्कृतिक विशिष्टताओं का अनुवाद में पुनःसृजन' पर एक निबंध लिखिए। 10
9. मशीनी अनुवाद की संकल्पना स्पष्ट करते हुए मशीनी अनुवाद की प्रक्रिया एवं विधियों की चर्चा कीजिए। 10
10. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए :
    (क) अनुवाद का पुनरीक्षण
    (ख) आशु अनुवाद की आंतरिक प्रक्रिया

Scanned with CamScanner

बांग्ला–हिंदी अनुवाद : तुलना और पुनःसृजन (एम.टी.टी.–002)

(जनवरी 2021 और जुलाई 2021 सत्रों के लिए)

कार्यक्रम कोड : पी.जी.सी.एम.एच.टी.
पाठ्यक्रम कोड : एम.टी.टी.–002
सत्रीय कार्य : एम.टी.टी.–004/एएसटी/
(टी.एम.ए)/2021

अधिकतम अंक : 100

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए

1- हिंदी और बांग्ला में भाषिक और सांस्कृतिक समानताओं और भिन्नताओं के बारे में सोदाहरण बताएं। (10)

अथवा

हिंदी और बांग्ला की कथन शैलियों की तुलना करते हुए उनके अनुवाद में आने वाली परेशानियों को समझाएं।

2- हिंदी और बांग्ला में शब्द रचना संबंधी समानताएं और अंतर स्पष्ट करें। (10)

अथवा

हिंदी और बांग्ला में विभिन्न प्रकार के पदबंधों के बारे में बताते हुए उनकी अनुवाद प्रक्रिया को समझाएं।

3- निम्नलिखत बांग्ला शब्दों का हिंदी पर्याय लिखें। (10)

আগুন	চাকরী	হাত	সকালে	বেশী
সেখানে	ভাবছে	সময়মত	দূর্বল	দুষ্টু
বাইরে	বিখ্যাত	কৌতুক	রাগ	সম্মুখ
সাদা	পেটুক	কাগজ	বৃষ্টি	সমস্ত

4- निम्नलिखित हिंदी शब्दों का बांग्ला पर्याय लिखें। (10)

चिड़िया	चीज	कुछ	कौन	बाहर
उतरना	कृपा	मैदान	फिर	अभी
पहले	आधा	मौसी	मित्र	गृहस्थी
चचेरा	चाचा	समझना	भेदभाव	धोना

5- निम्नलिखित बांग्ला वाक्यों का हिंदी में अनुवाद कीजिए। (10)

Scanned with CamScanner

(ক) হয়তো অভিষেক বাড়ী পৌঁছে গেছে

(খ) য়াঃ চোরচট্টা তো পালিএ গেলো

(গ) প্রসাদ গ্রহন করুন।

(ঘ) দয়া করে এখানেইট বসূন।

(চ) বাবা বলিছিলো, পড়ি না দেখি।

(ছ) একটুট বেড়াতে যাব।

(জ) তুমি যাকে পঠন্দ করেছ, আমাদের তাতে মত আছে।

(ঝ) মাঠ ফুরিয়ে এসেছে, সামনে সড়ক।

(ট) ও দিকে কোথায় যাবেন।

(ঠ) আরও একজনকে সে হতাশ করল আজকে।

(10)

6- निम्नलिखित हिंदी वाक्यों का बांग्ला में अनुवाद कीजिए।

(क) आज किस विषय की कक्षा है।

(ख) अब तुम्हारे पिताजी की तबियत कैसी है।

(ग) वहां तो मैं अक्सर जाता रहता हूं।

(घ) कल मीनाक्षी का भाई मिला था।

(च) आज शाम को मैं बाजार जाऊंगी।

(छ) परीक्षा की तैयारी कैसी चल रही है।

(ज) अभी-अभी तो मैं घर लौटा हूं।

(झ) इस रविवार को शायद हम सब सिनेमा देखने जाएंगे।

(ट) खाने में क्या बना है।

(ठ) किसी दिन तुम लोग मेरे घर खाने पर आओ।

Scanned with CamScanner

7. निम्नलिखित बांग्ला पद्यांशों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए : (10×2)

(ক)

রাস্তায় ভরতের বাড়ির সামনেই শোনা গেল দু'জন মাতালের জড়ানো গলার হল্লা। ভরত বারান্দা দিয়ে একটু উঁকি মেরে দেখল, দু'জনেরই বেশ যণ্ডামার্কা চেহারা, স্খলিত পায়ে হাঁটছে। ভরত আর একটু দেরি করলেই ওদের পাল্লায় পড়ে যেত। রাত্তিরবেলা মাতালরা যখন নিরীহ মানুষদের ধরে টানাটানি করে, তখন সাহায্যের জন্য কেউ এগিয়ে আসে না। কোতোয়ালির পাহারাওয়ালারা পথে পথে টহল দেয় বটে, মাতাল দেখলে তারা বেদম পেটায়, কিন্তু তারা এরকম গলিতে ঢোকে না।

ছাদের কার্নিস দিয়ে একটা বেড়াল ম্যাও ম্যাও করে ঘুরছে। পাশের বাড়ির মাচার ওপর পায়রারা ঝটপটিয়ে উঠছে সেই ডাক শুনে। বেড়ালটা প্রায়ই বাঁশ বেয়ে ওপরে ওঠার চেষ্টা করে, কিন্তু কোনও লাভ নেই, পায়রাগুলো হুস করে উড়ে যায়। রাত্রির আকাশে ঘুরপাক খায় তারা। বেড়ালটা ব্যর্থ আক্রোশে গজরাতে থাকে, যেন সে বলতে চায়, কেন তার ডানা নেই? বেড়ালটার এই ধরনের ধৃষ্টতা পছন্দই করে ভরত, কারণ তাতে পায়রাগুলো ওড়ার দৃশ্য সে উপভোগ করতে পারে। রাত্তিরবেলা তারা ডাকে না, শুধু নিঃশব্দে উড়তে থাকে। আজকের রাত অন্ধকার, কিন্তু জ্যোৎস্না রাতে এক গুচ্ছ পায়রা যখন ঘুরে ঘুরে ওড়ে, তখন যেন এক অলৌকিক মায়ার সৃষ্টি হয়।

বিছানা একেবারেই টানছে না ভরতকে। একটুক্ষণ সে চুপ করে বসে চুরুট টানল, তারপর তার ইচ্ছে হল চা বানিয়ে খেতে। এর আগেও কয়েকবার মাঝরাতে ঘুম ভেঙে গেলে সে চা বানিয়ে খেয়েছে, অপূর্ব স্বাদ পাওয়া যায় তখন।

উনুন ধরাবার আগেই ভরত একটা বেশ বড় ধরনের ঘোড়ার গাড়ির শব্দ পেল রাস্তায় এবং গাড়িটা যেন এ বাড়ির দরজার সামনেই থামল। তারপরই একজন কেউ গর্জন করার মতন ডাকল, ভরত ! ভরত ! দরজা খোল !

সেই ডাক শুনে ভরত কেঁপে উঠল। এত রাতে তাকে কে ডাকতে আসবে? এ কণ্ঠস্বর তো দ্বারিকার নয় ! বারান্দা দিয়ে ঝুঁকে সে জিজ্ঞেস করল; কে?

ঘোড়ার গাড়ি থেকে.নেমে একজন দীর্ঘকায় মানুষ দাঁড়িয়ে আছে, ওপর থেকে চেনা যাচ্ছে না। সেই ব্যক্তি ওপরের দিকে মুখ তুলে বলল, দরজা খুলে দে !

ভরত এবার ছুটে নেমে এল সিঁড়ি দিয়ে। একতলার কোলাপসিব্‌ল গেটের চাবিটা পাশের দেওয়ালেই ঝোলে। গেট খুলে বাইরে এসে দেখল, পুরোদস্তুর সাহেবি পোশাক পরা শশিভূষণ, হাতে একটা ছড়ি, অসহিষ্ণু এক সৈনিকের মতন ছটফট করছেন। ভরতের মুখের দিকে তিনি চেয়ে রইলেন কয়েক পলক, তারপর গাড়ির দিকে মুখ ঘুরিয়ে বললেন, নেমে এসো !

বুকের কাছে হাত দুটি জড়ো করে গাড়ি থেকে নামল এক রমণী, রাস্তায় আলো নেই, সে রমণীও মুখ নিচু করে আছে, তবু শুধু শরীরের রেখা দেখেই ভূমিসূতাকে চিনতে তার এক মুহূর্তও দেরি হল না।

তলোয়ারের ভঙ্গিতে হাতের ছড়িটা তুলে শশিভূষণ বললেন, ওপরে চল !

সিঁড়ি দিয়ে উঠতে গিয়ে দু'বার হোঁচট খেলেন শশিভূষণ, বিরক্তিতে গজগজ করতে লাগলেন এবং ওপরে এসে যদিও দেখলেন যে একটা হারিকেন জ্বলছে, তবু বললেন, আলো জ্বালিসনি কেন?

ওই হারিকেন ছাড়া ভরতের ঘরে আর কোনও বাতি নেই। সে শিখাটা উস্কে দিল অনেকখানি, তারপর হারিকেনটা উঁচু করে তুলে ধরল। প্রথমেই তার নজরে পড়ল, ভূমিসূতার কপালে একটা ব্যান্ডেজ বাঁধা, তার এক পাশ এখনও রক্তে ভেজা।

Scanned with CamScanner

(২৫)

'চৈতন্যলীলা' নাটকের জন্য স্টার থিয়েটারের জয়-জয়কারের ফলে গিরিশচন্দ্র পর পর আরও কয়েকটা ভক্তিরসাত্মক নাটক নামিয়েছিলেন। 'প্রহ্লাদ চরিত্র', 'নিমাই সন্ন্যাস', 'প্রভাস যজ্ঞ', 'বুদ্ধদেব চরিত'। এই সব নাটকগুলিতে ভক্তিবাদের জোর প্রচার হতে লাগল বটে, কিন্তু গিরিশচন্দ্র টের পেয়েছিলেন দর্শকের সংখ্যা ক্রমশ কমে আসছে। রঙ্গমঞ্চ পুরোপুরি প্রচারকের ভূমিকা নিলে দর্শকেরা বিমুখ হবেই। অধিকাংশ দর্শকই থিয়েটারে আসে প্রমোদ উপভোগের জন্য। রস সৃষ্টিই বড় কথা। মহৎ বিষয়বস্তু কিংবা যত বড় আদর্শের কথাই থাক না কেন, রসোত্তীর্ণ না হলে তা দাগ কাটে না মানুষের মনে।

দর্শক সংখ্যা কমতে শুরু করায় নট-নটী-নাট্যকার-ম্যানেজার সবাই উদ্বিগ্ন। 'চৈতন্যলীলা'র ব্যবসায়িক সাফল্যেই সবাই খুশি হয়েছিল, তারপর আর বেশি বেশি লীলা জমছে না। রামকৃষ্ণ ঠাকুরের পরম ভক্ত হবার পর থেকে গিরিশচন্দ্র এই ধরনের নাটক ছাড়া অন্য কিছু লিখতে চান না। গিরিশের ব্যক্তিগত জীবন দেখলে অবশ্য তাঁর ভক্তিবাদ বোঝা অন্যদের পক্ষে দুষ্কর। সব কিছুই চলছে আগেকার মতন। একদিন 'চৈতন্যলীলা' অভিনয়ের পর নবদ্বীপের কয়েকজন বিশিষ্ট, মাননীয় বৈষ্ণব পণ্ডিত এসেছিলেন গিরিশচন্দ্রের সঙ্গে দেখা করতে। ভক্তিতে গদগদ হয়ে তাঁদের চোখ দিয়ে তখনও প্রেমাশ্রু ঝরছে, মঞ্চের পেছনে এসে দেখেন, গিরিশের হাতে মদের গেলাস, সামনে বোতল ও মাংসের চাট। তা দেখে পণ্ডিতপ্রবরদের অশ্রু শুকিয়ে গেল, দৃশ্যটিকে যেন বিশ্বাসই করতে পারলেন না। আবেগের কথা কিছু মনে এল না, একজন আমতা আমতা করে জিজ্ঞেস করলেন, আপনার কি শরীর খারাপ? ওষুধ খাচ্ছেন বুঝি? গিরিশচন্দ্র অট্টহাস্য করে বলে উঠেছিলেন, না মশাই, ওষুধ নয়, মদ, মদ খাচ্ছি, মদ চেনেন না?

বৈষ্ণব পণ্ডিতরা প্রায় দৌড়ে পালিয়ে গিয়েছিলেন। তারপর গিরিশের হাসি আর থামে না। সেই হাসিতে আরও অনেকে যোগদান করেছিল বটে, দু-একজন আপত্তিও জানিয়েছিল। উপেন মিত্তির নামে একজন বলেছিল, কেন ওনাদের এমন ভয় দেখালেন? ওনারা বাইরে গিয়ে এইসব রটাবেন। মিথ্যেমিথ্যি বলে দিলেই পারতেন যে ওটা ওষুধ।

গিরিশ হুঙ্কার দিয়ে বলেছিলেন, কেন মিথ্যে কথা বলব? আমার কী দায় পড়েছে? মদ খাওয়া খারাপ, না মিথ্যে কথা বলা বেশি খারাপ?

উপেন মিত্তির বলেছিল, ওনারা ভেবেছিলেন, আপনি চৈতন্যদেব সম্পর্কে এমন ভক্তি-কাব্য লিখেছেন, তাই আপনি নিজেও বুঝি চৈতন্যদেবের ভাবশিষ্য হয়েছেন।

গিরিশ কয়েক মুহূর্ত উপেনের দিকে তাকিয়ে বলেছিলেন, দেখ বাপু, তোমাকে একটা সার কথা বলি। রাইটার বা আর্টিস্টদের কাছ থেকে এ রকম আশা করা যায় না। নাটকে আমি অনাহারী, অনাথ, মুমূর্ষু, ঘাতক এ রকম কতই না চরিত্র রচি। তা বলে কি আমাকেও অনাহারী, অনাথ, মুমূর্ষু, ঘাতক হতে হবে? আমাকে আমার মতন থাকতে দাও। মদ খেলে আমার ফুর্তি হয়, তাই খাই। ওদের জন্য ছাড়তে যাব কেন? একমাত্র একজনের কথায় ছাড়তে পারতাম। আমার গুরু যদি বলতেন, তা হলে সেই দণ্ডেই মদ্যপান চুকিয়ে দিতাম। গুরু তো আমায় কিছুই ছাড়তে বলেননি। তিনি বলেছেন, আমি কলঙ্কসাগরে সাঁতার দিলেও আমার গায়ে কলঙ্ক লাগবে না।

8. निम्नलिखित हिन्दी पद्यांशों का बांग्ला में अनुवाद कीजिए (10×2)

8 (क)

पिताजी दूरदर्शी थे। उन्होंने हम दोनों भाइयों का भविष्य भांप लिया था कि हम भी बड़े होकर साथ नहीं रहेंगे और संयुक्त परिवार की किसी परंपरा को आगे नहीं बढ़ाएंगे। वे रिटायर होते ही बीमार रहने लगे थे और समझ गए थे कि अब ज्यादा नहीं जिएंगे। सो, उन्होंने मकान अम्मा के नाम कर दिया और हम दोनों भाइयों से कह दिया कि जहां तक हो सकेगा, अम्मा हम दोनों को पढ़ा-लिखा देंगी, पर छोटी बहन के हाथ पीले करने की जिम्मेदारी हम दोनों भाइयों को निभानी पड़ेगी।

पिताजी चल बसे, तो उनकी पेंशन के सहारे परिवार की बागडोर अम्मा ने संभाल ली। भाई साहब की नौकरी लगते ही उन्होंने हमारे साथ जाकर स्वयं एक अच्छी लड़की देखी, भाई साहब को ले जाकर पसंद कराई, और उनकी शादी करा दी।

हम और सुमन अभी पढ़ रहे थे और अम्मा हमें पढ़ा रही थीं। भाई साहब की नौकरी अच्छी थी, लेकिन 'ट्रांसफरेबल' थी। वे चाहते थे कि वे जहां भी जाएं, भाभी उनके साथ जाएं। लेकिन अम्मा ने स्पष्ट कह दिया कि यह न तो उचित है, न व्यावहारिक, ''पहले तो किसी से कह-सुन कर या ऊपर वालों को कुछ दे-दिला कर अपना तबादला रुकवा लो, नहीं तो जहां भेजा जा रहा है, चले जाओ और वहां जाकर तबादला वापस कानपुर करा लो।''

भाई साहब ने अम्मा की आज्ञा शिरोधार्य की और तबादला रुकवाने या वापस कानपुर करा लेने की कला साध ली। उनका परिवार भी तेजी से बढ़ा। पहले एक लड़की, फिर एक लड़का। केवल एक लड़का पर्याप्त न समझ कर दूसरे के लिए प्रयास किया, तो फिर एक लड़की हो गई, लेकिन दूसरा लड़का तो चाहिए ही था, इसलिए उन्होंने पुनः प्रयत्न किया और दूसरा पुत्ररत्न पाया।

इस प्रकार भाई साहब का परिवार बढ़ता जा रहा था और मकान, जो पहले ही छोटा था, और छोटा पड़ता जा रहा था। उसमें चार कमरे थे। जब तक पिताजी की मृत्यु नहीं हुई थी, एक कमरा पिताजी का था, जिसमें उनका निजी पुस्तकालय था। वे इंटर कॉलेज में गणित पढ़ाते थे, लेकिन उनकी रुचि संस्कृत साहित्य और भारतीय दर्शन में थी, इसलिए वे इसी प्रकार की पुस्तकें खरीदते और पढ़ा करते थे। दूसरा कमरा अम्मा और सुमन का था, जिसमें वे दोनों सोती थीं और सुमन पढ़ती-लिखती थी। तीसरा कमरा भाई साहब का था और चौथा हमारा। पिताजी के न रहने पर उनका कमरा अम्मा ने ताला लगा कर बंद कर दिया, क्योंकि उसमें पिताजी की पुस्तकें थीं, जो अम्मा के शब्दों में 'उन्हें जान से ज्यादा प्यारी थीं'। लेकिन भाई साहब का परिवार बढ़ा, तो दो कमरे उनके हो गए। एक कमरे पर तो भाभी और भाई साहब का अधिकार था ही, बच्चे बड़े होने लगे, तो अम्मा और सुमन के कमरे पर भी उनका अधिकार हो गया। अम्मा और सुमन मेरे वाले कमरे में रहने लगीं और मैं ि पताजी वाले कमरे में। इस प्रकार पिताजी का पुस्तकालय एक प्रकार से मेरा हो गया।

Scanned with CamScanner

8 (ख)

एक प्रकार से यह आयोजन लड़की देखने-दिखाने जैसा सिद्ध हुआ और अम्मा ने साधना जी को पसंद ही नहीं, अपनी पुत्रवधू के रूप में स्वीकार भी कर लिया। स्वयं साधनाजी ने अगले कुछ दिनों में उन पर अपने सुंदर स्वभाव, सेवाभाव और अपनेपन की खूब अच्छी छाप छोड़ी। कॉलोनी के उच्चतर माध्यमिक बालिका विद्यालय में सुमन को ग्यारहवीं कक्षा में प्रवेश दिलाने की लगभग पूरी भाग-दौड़ उन्होंने ही की। इससे अम्मा उनका एहसान मानने लगीं और सुमन मुझसे अधिक साधनाजी को अपना अभिभावक समझने लगी।

एक दिन साधनाजी के मम्मी-डैडी बकायदा शादी का प्रस्ताव लेकर आए और अम्मा ने उसे स्वीकार कर लिया। बाद में अम्मा ने मेरी यह शर्त भी स्वीकार कर ली कि अपनी शादी पर मैं कानपुर से किसी को नहीं बुलाऊंगा और शादी हम तिलक-दहेज-बैंड-बाजा-बारात के बिना कोर्ट में करेंगे।

संयोग से, जिस दिन हमारी शादी हुई, उसी दिन कानपुर से भाई साहब का एक पत्र हमें मिला, जिसमें दीगर बातों के अलावा उन्होंने लिखा था- ''दिल्ली वाले हो गए हो, इसका मतलब यह नहीं कि तुम इस घर को अपना घर न समझो। आदमी कहीं भी जाए, उसे अपनी जड़ों से जुड़े रहना चाहिए।''

Scanned with CamScanner

बांग्ला–हिंदी के विभिन्न भाषिक क्षेत्रों में अनुवाद (एम.टी.टी.–003)

(जनवरी 2021 और जुलाई 2021 सत्रों के लिए)

कार्यक्रम कोड : पी.जी.सी.एम.एच.टी.
पाठ्यक्रम कोड : एम.टी.टी.–003
सत्रीय कार्य : एम.टी.टी.–005/एएसटी/
(टी.एम.ए)/2021

अधिकतम अंक : 100

10

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए

1- सामाजिक विज्ञान और तकनीकी शब्दावली वाली सामग्री का अनुवाद करते समय क्या सावधानियां बरतनी जरूरी हैं।

अथवा

नाटक का अनुवाद कथा साहित्य के अनुवाद से किस तरह भिन्न होता है, सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

अथवा

समाचारों के अनुवाद में किन मुश्किलों का सामना करना पड़ता है।

2- निम्नलिखित शब्दों के बांग्ला और हिंदी पर्याय बताते हुए इनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए। 10

चर्चा	राग	अतिरिक्त	विचार	व्यवस्था
स्रोत	अनुभव	संपर्क	आदर	आदर

5X2

3- निम्नलिखित अंशों का हिंदी में अनुवाद कीजिए

(क)

ওর জীবনটাই ব্যর্থ

আভাষের আয়ু শেষ হয়ে এসেছে

ছবির নাম অভিমান

আগামী আর্থিক বছর থেকে লিংগভিত্তিক বাজেট

তাংদের বলা হয় নবরত্ন

তিনী গুনী ব্যক্তিদের খুব সমাদর করছেন

কে এসেছে এখানে

Scanned with CamScanner

আকাশ থেকে উল্কা খসে পড়ে

বাড়তি জমিতে চাষের কাজে দাসদের লাগানো হলো

বেশী জমী চাষ করতে হলে মাধব

আমদের দেশ ভারত আয়তনে বিরাট

আবার অনেকে আছেন যাংরা কোনো ধর্মেইট বিশ্বার করেন না

আমাদের দেশ গণতান্ত্রিক ব্যবস্থা মাধ্যমে শাসিত হয়

আমার মাটির উপর কোথায় কী পাওবা যায় জেনেছি

বহু পুরানো দিন মাটির বাসনেইট ছিল একমাত্র সম্বল

(খ)

আমরা স্বাধীন দেশের নাগরিক

রাসেন্দু খুব বাজে ছেলে

শিক্ষা পাওয়া আমাদের জন্মগত অধিকার

সবাইকে জানাইট আন্তরিক আভার

আপনার পরামর্শ দেবার অনুরোধ জানাচ্ছি

ফসল ফলান তার স্বাধীন জীবিকা

আর আমি করব কি

ওদের যাবে কোথায়

মাস্টার মোশায় ডাকছেন

কি রান্না হয়ে গাছে

আপনার উপস্থিতি একান্ত কাম্য়

কাজের বিস্তারিত বিবরণ দেওয়া আছে

দেখতে দেখতে পাঁচটিট বছরপেরিয়ে এলে তুমি

য়োগায়োগ করতে বলা হচ্ছে

দাদা এমন চলবে না

4- निम्नलिखित अंशों का हिंदी में अनुवाद कीजिए 10X7

(क) (ख) (ग) (घ) (च) (छ) (ज)

Scanned with CamScanner

একটা কারণ অবশ্যই মনের আবহাওয়ায় কয়েক বছর যে প্রত্যক্ষের দিকে বৈজ্ঞানিকমন্য ঝোঁক দেখা যাচ্ছে, সেই ঐতিহাসিক দৃষ্টির প্রসার। তাছাড়া লেখকেরা যে-পরীক্ষা-নিরীক্ষা করছেন, তার থেকেও লেখার বিষয়ে সচেতনতা বৃদ্ধি পাচ্ছে। বলা যেতে পারে যে আমাদের সাহিত্যের শৈশব অতিক্রান্ত এবং সাহিত্যিকরা আজ বিষয় ও কলাকৌশল, ভাব ও রূপের অভিন্নতায় সন্দেহহীন। কলাকৌশল বা টেকনিকের প্রগতি নির্ভর করে মানসের ব্যাপ্তি বা রূপান্তরে। আর এই মনের মানচিত্রে সৃষ্টির আবেগ থাকবে কী ক'রে যদি সে জীবনের দিকে না-তাকায়? সাধারণের জীবনেই ত এ-মানসসরোবরের উৎস, যদিচ তার নীল জলে আকাশের ছবি প্রতিফলিত। এই উৎসের সন্ধান কেউ হয়ত জীবনযাত্রার কর্মধারায় পান, কেউ জনগণমন-অধিনায়কদের খুঁজে পান ইতিহাসের দ্বন্দ্বময় প্রগতিতে।

সমস্যা ওঠে জ্ঞান ও সৃষ্টিক্রিয়ার হ্রস্বদীর্ঘে। কারণ প্রায়ই দেখা যায় যে প্রত্যক্ষ জীবন থেকে মন স'রে যায় জ্ঞাত পরোক্ষের স্বকীয় ধর্মে। শিল্পসাহিত্যে কিঞ্চিৎ স্থায়ী বন্দোবস্তের কারণ মানবচৈতন্যেরই vested interests বা সম্পত্তির স্থাবরতার দিকে ঝোঁক। ভাষার একটা স্বাভাবিক স্থিতিপ্রবণতার জন্য রচনার গতিতে আসে দ্বিধা। গতিতে গা ভাসালে অবশ্য খুঁটিতে বাঁধা মনের দ্বিধাও নিষ্প্রয়োজন। সজীব রচনাতে তাই শিল্পী ও শিল্পবস্তু, বিষয় ও টেকনিকে টান পড়ে আবদ্ধ ধনুকের টঙ্কারে শর ও ছিলার টানের মতো। লক্ষ্যভেদের লক্ষ্য হয়ত অনেকসময়ে সরাসরি চেনা যায় না, ধনুর্ভঙ্গও হ'তে পারে। তবু প্রগতিশীল সাহিত্যের চিরকালীন লক্ষণ হ'ল এই চৈতন্য-আবদ্ধ টান। অভ্যাসিক শিল্প উপাদেয় পণ্যশিল্প হ'তে পারে, চমৎকার কুটিরশিল্প হ'তে পারে, প্রগতির প্রশ্নক্ষেপ সে-অভ্যাসের যন্ত্রে অবান্তর।

নেতিতে আরম্ভ হ'তে পারে এই মানসের প্রগতি। তারপরে মিনারবাসীর ভূতলে অবতরণ। মুখ্য ব্যাপার হচ্ছে ঐ-চৈতন্য, ঐ-বোধ। ঐ-বোধের পেশীবহুল ছাপ আসে স্বভাবজড় পাথরে, রং-রেখায়, শব্দে, ভাষার বনেদী রীতিতে, বাক্যের গোঁড়ামিতে।

Scanned with CamScanner

(১৫)

এ সবই যে যাদুগোপালের রসিকতা, তা ভরত বুঝল কৃষ্ণনগরে পৌঁছে। স্টেশনে ওদের জন্য একটি ঘোড়ার গাড়ি মজুত ছিল। যাদুগোপালের মামার বাড়ির অবস্থা মোটেই সাধারণ নয়, নদীর ধারে রীতিমতন এক প্রাসাদ, অনেকদিন সংস্কার হয়নি বটে, তবু যথেষ্ট সুদৃশ্য। মামা অনুপস্থিত হলেও দাস-দাসীর সংখ্যা অনেক, জমিজমার আয় আছে বোঝা যায়।

ওরা পৌঁছে হাত-পা ধুয়ে বসতে না-বসতেই ওদের সামনে বড় বড় দুটি কাঁসার থালায় নানাপ্রকার ফল-মূল ও মিষ্ট দ্রব্য সাজিয়ে দেওয়া হল। সেই সঙ্গে এক গেলাস করে গরম দুধ।

ভরত যাদুগোপালের দিকে আড় চোখে তাকাতেই যাদুগোপাল বলল, কাল থেকে শুধু ছোলা আর গুড়!

খাওয়াদাওয়া শেষ করার পর যাদুগোপাল বলল, চল, আমার দিদিমার সঙ্গে দেখা করে আসি। উনি উকিল গিন্নি, আমার দাদামশাই ছিলেন নামকরা উকিল, ওঁর সঙ্গে কথায় পারবি না।

বাড়িটি দোতলা, একতলাতেই বেশি ঘর এবং অনেকখানি ছড়ানো। কয়েকটি দালান পার হয়ে ভেতরের দিকে একটা ঘরের দরজার কাছে ওরা দাঁড়াল। সন্ধে হয়ে এসেছে প্রায়, ঘরের মধ্যে দুটি দেয়ালগিরি জ্বলছে। একটা সিংহাসনের মতন বড়, মখমলের গদি আঁটা চেয়ারে বসে আছেন এক বৃদ্ধা, একটি পরিচারিকা মেঝেতে বসে তাঁর পা টিপে দিচ্ছে। বৃদ্ধাটির রঙ হাতির দাঁতের মতন, মাথার চুল সব সাদা, পরনে পাড়হীন সাদা থান, চোখের দৃষ্টি স্থির। হঠাৎ দেখে মনে হয় এক শ্বেত পাথরের মূর্তি।

কেউ কিছু বলার আগেই বৃদ্ধা জিজ্ঞেস করলেন, কে এল রে? কে?

যাদুগোপাল এক পা এগিয়ে গিয়ে বলল, আমি যাদু। নায়েবমশাই খবর দেননি যে আমি আজ আসব?

বৃদ্ধা পরিচারিকাটিকে বললেন, সরো, তুই এবার যা!

তারপর দু হাত বাড়িয়ে ডাকলেন, আয়, কোলে আয়!

ভরত এইবার বুঝতে পারল, বৃদ্ধা একেবারে অন্ধ। কিন্তু তাঁর কণ্ঠস্বরে তেজ আছে। কণ্ঠস্বর শুনলেই মনে হয়, তিনি সারা জীবন আদেশ দিতে অভ্যস্ত। শরীর এখনও জীর্ণ হয়নি, অত বয়েস বোধ হয় না।

যাদুগোপাল একটি বাচ্চা ছেলের মতন দৌড়ে গিয়ে দিদিমার কোলে ঝাঁপিয়ে পড়ল। তিনি তাকে বেশ জোরে, চটাং চটাং করে থাপ্পড় মারতে মারতে বলতে লাগলেন, হারামজাদা ছেলে, এতদিন পর বুড়িকে মনে পড়ল? চত্তির, বোশেখ, জষ্ঠি এই তিন মাস কেটে গেল, তার মধ্যেও ছেলের দেখা নেই! কোন রাজকাজ্যে ব্যস্ত ছিলি, অ্যাঁ?

যাদুগোপাল দিদিমার গলা দু হাতে জড়িয়ে ধরে বলল, হয়েছে, হয়েছে, অনেক মেরেছ, এবার আদর করো!

নীপময়ী সঙ্গে সঙ্গে যাদুগোপালের মুখ চুমোয় ভরিয়ে দিতে লাগলেন। জানতে চাইলেন নানান খবরাখবর। একসময় বললেন, এবার অন্তত দিন দশ-বারো থাকবি তো?

যাদুগোপাল বলল, যদি তার চেয়েও বেশিদিন থাকি? এক মাস? থাকতে দেবে তো?

নীপময়ী বললেন, হুকুম দিয়ে রাখব, আমি খালাস না-দিলে তোকে এখান থেকে কেউ যেতেই দেবে না।

Scanned with CamScanner

(গ) (ক) মহারাজ বীরচন্দ্র মাণিক্য তাঁর পাটরানীর মৃত্যুশোকে তীর্থ করতে গেলেন বৃন্দাবনে। রাজাদের শোকের বহর বোঝা যায় শ্রাদ্ধের আড়ম্বর দেখে। মহারানী ভানুমতী সৌভাগ্যবতী, তাঁর শ্রাদ্ধের অনুষ্ঠান হল দু'জায়গায়, রাজধানী আগরতলায় এবং বৃন্দাবনের পুণ্যস্থানে। রাজকোষ থেকে খরচ হল এক লক্ষ টাকা। আর কোনও রানীর পারলৌকিক কাজের জন্য এই বিপুল অর্থ ব্যয় কল্পনাই করা যায় না। ত্রিপুরার অনুষ্ঠানে বীরচন্দ্র সারাদিন অভুক্ত থেকে যজ্ঞ করেছেন, তাঁর চক্ষুদুটি অশ্রুসজল। ব্রাহ্মণদের বস্ত্র, স্বর্ণখণ্ড ও একশো গোবৎস দান করেছেন, সবাই ধন্য ধন্য করেছে রাজার নামে। বৃন্দাবনে এসে মহারাজ দেড় হাজার ব্রাহ্মণকে ভোজ দিয়েছেন, এতবড় শ্রাদ্ধবাসর এখানকার মানুষ বহুদিন দেখেনি। অনেকে বলাবলি করতে লাগল, অতদূর থেকে এসে ত্রিপুরার রাজা জয়পুরের রাজাদেরও টেক্কা দিয়েছেন।

তবে বৃন্দাবন ঠিক শোক প্রকাশের উপযুক্ত স্থান নয়। নামমাহাত্ম্যেই অনেক কথা মনে পড়ে। আকাশে কাজল বর্ণ মেঘ দেখে মনে পড়ে এক বংশীধারী চিরকিশোরের কথা, যমুনার তরঙ্গে ভেসে ওঠে চিরকালের প্রেমিকা রাধার মুখচ্ছবি। সেই রাখালের দল ও গোয়ালিনীরা আর নেই বটে, কিন্তু বাতাসে কান পাতলে যেন শোনা যায় তাদের গান ও কলহাস্য। বৃন্দাবনের পথের ধুলোতেও ছড়িয়ে আছে রাধা-কৃষ্ণের স্মৃতি। বীরচন্দ্রের কবি মন উতলা হয়ে ওঠে।

মহারাজ আরও কয়েকটি তীর্থদর্শনে যাবেন ভেবেছিলেন, কিন্তু তড়িঘড়ি ফিরে এলেন ত্রিপুরায়। রাধারমণ ঘোষ, ধনঞ্জয় ঠাকুর, নরধ্বজ সিংহ প্রমুখ কয়েকজন ঘনিষ্ঠ পারিষদকে ডেকে ব্যক্ত করলেন তাঁর হৃদয়ের বাসনা, তিনি কুমারী মনোমোহিনীকে অবিলম্বে বিয়ে করতে চান। এ বিবাহ নিছক ইন্দ্রিয় সুখের জন্য নয়। এই প্রৌঢ় বয়সে তিনি আবার বরের টোপর মাথায় দিতে চান নেহাত বাধ্য হয়ে। এক মহান দায়িত্ব পালনের জন্য। মৃত্যুর আগে মহারানী ভানুমতী তাঁর এই ইচ্ছে জানিয়ে গেছেন। মহারানীর শেষ ইচ্ছে পালন করা তাঁর অবশ্য কর্তব্য।

এ প্রস্তাব শুনে কেউই বিস্মিত হলেন না। রাধারমণ বললেন, তা হলে কন্যাটিকে তার পিত্রালয়ে পাঠিয়ে দেওয়া হোক। আগামী বৎসর শুভদিনক্ষণ দেখে...

তাঁকে বাধা দিয়ে নরধ্বজ বললেন, আগামী বৎসর? এত দেরি করতে হবে কেন?

(ঘ)

"যাকে এক ভঙ্গিতে আকস্মিক বা এলোমেলো ঘটনা মনে হয়, আরেকদিক থেকে তাই স্ট্যাটিষ্টিকাল্ বা সংখ্যাবিজ্ঞানের নিয়মে প্রকাশিত। নিউটনীয় বিজ্ঞানের স্বয়ম্ভরতা ও স্বাধীনতার অতিমাত্রা এখন সমষ্টিজীবযৌথ ঘটনাবলির পর্যালোচনায় রূপান্তরিত।... যুদ্ধের আগে থেকেই উদারনীতিক ভাববাদীর বিজ্ঞানের চিত্র কল্পনাবিলাসে দাঁড়িয়েছে। স্বাধীন বৈজ্ঞানিক প্রায় লুপ্ত জীববিশেষ।"

সর্বেপল্লী রাধাকৃষ্ণন একবার নিখিল ভারতীয় সংখ্যাবিজ্ঞান সম্মেলনে বলেছিলেন যে বিজ্ঞানের সত্য যেমন এক হিসাবে সংখ্যাবিজ্ঞানের সাহায্যে সমীকৃত তত্ত্ব, তেমনি সংখ্যাবিজ্ঞানের তথ্যপ্রমাণ রসদ জোগায় আধুনিক মানুষের উন্নতির পরিকল্পনায়। ভারতীয় সংখ্যাবিজ্ঞানাগার এরই মধ্যে ১৯৩৫-৩৬ থেকে ১৯৪২-৪৪ অবধি প্রায় ১১৫৯ তথ্যানুসন্ধান এবং নানাবিধ বড়ো সুমারের কাজ করেছে। দেশের লোকের মধ্যে এ-কাজের গুরুত্ববোধ কেন এত কম জানি না। বিজ্ঞানাগার অবশ্যই ব্যবসা-প্রতিষ্ঠান নয়, ফলে তার আত্মসম্মান প্রচারকার্যের উঞ্ছবৃত্তিতে শেষ হয় না। কিন্তু আশা করা যায়, অদূর ভবিষ্যতে আমাদের জাতীয় নৈরাশ্য কমবে আর বৈজ্ঞানিক মনোভাব বৃদ্ধি পাবে এবং সংখ্যাবিজ্ঞানের সাহায্য আমরা নানাদিকে গ্রহণ করতে পারব। তত্ত্ব ও তথ্য, জীবন ও বিজ্ঞানের ভিত্তিতেই এ-বিজ্ঞানের কাজ, প্রত্যক্ষের সমস্তায় এখানে রাশি-প্রত্যয়ের কূটচর্চা হয়। বলা বাহুল্য, আমরা বিজ্ঞানের অর্থ বিদ্যালয়ের নিরালম্ব মৃত ও নিরাপদ জ্ঞান বুঝি না। জে ডি ব্যর্নলের ভাষায় বহুকাল হ'ল বিজ্ঞানের সীমা প্রসারিত। বিজ্ঞান এখন হয়েছে উৎপাদন-যন্ত্রের ও কৃষির একাত্ম অংশ। স্বাস্থ্যের নিয়ন্ত্রণে এর হাত, ব্যবসায় ব্যাঙ্কে আপিসে সরকারি কাজেও বিজ্ঞানের নির্দেশ। বিজ্ঞানের বিধিব্যবস্থাগুলি আর মনোনীত ভাবগুলিই একালের চিন্তা ও কর্মধারার রূপ নির্ণয় করে।

(—চ)

আজকের বাজারে যেসব আদুরে ছেলেমেয়েরা মাস্টারকে মাসকাবারি দেড়-দুশো টাকা ধরিয়ে দিয়ে ও নোটেশন লিখিয়ে নিয়ে গান শেখে এবং রেডিও টিভিতে প্রোগ্রামের উচ্চাশা পোষণ করে তাদের বাপমায়েদের ভাস্কর বাখ্‌লে, ওস্তাদ আলাউদ্দীন খাঁ প্রমুখের ইতিহাস জানা উচিত, কিভাবে আধপেটা থেকে ও ওস্তাদের লাথিঝাঁটা খেয়ে অক্লান্ত পরিশ্রম করে তাঁরা তালিম হাসিল করেছিলেন। ভাস্করের জন্ম ১৮৬৯ সালে বরোদা স্টেটের কঠোর নামে এক গ্রামের দরিদ্র মারাঠি পরিবারে। বাল্যকাল থেকেই গলা অত্যন্ত সুরেলা ছিল, আর প্রতিভাও অসাধারণ। বাপের রোজগার যা ছিল তাতে নুন আনতে বাজরার রুটি ফুরিয়ে যেত। এ সময়ে মারাঠি নাটক কোম্পানির চরেরা (অর্থাৎ আজকের ভাষায় talent spotter) ঘুরে ঘুরে সুরেলা ছোক্‌রা গাইয়েদের সন্ধান করে বেড়াত, হিরোইন সাজার জন্য। এই রকম একজনের চেষ্টায় সামান্য মাইনেতে কির্লোস্কর নাট্য কোম্পানিতে ভাস্করের চাকরি হয়। তখন তাঁর বয়স বছর চোদ্দ-পনেরো। মারাঠি নাট্যসঙ্গীত সবই রাগাশ্রিত এবং তাতে গলা খেলানোর মওকাও প্রচুর। অনতিবিলম্বে ভাস্করকে বাছা বাছা পার্টে গান করার সুযোগ দেওয়া হয়, তার মধ্যে 'রামরাজ্যবিয়োগ' পালায় দশরথের যুবতী পত্নী কৈকেয়ীর রোলে অভিনয় ও গান করে ভাস্করের বেশ নাম হয়। মাস কয়েক বরোদায় কাটিয়ে কির্লোস্কর কোম্পানি তাঁবু তুলে জব্বলপুর, দেওয়াস, উজ্জয়িনী হয়ে অবশেষে ইন্দোরে পৌঁছয়। সে-যুগে, বোম্বাই প্রেসিডেন্সি, বরোদা, গোয়ালিয়র, ইন্দোর প্রভৃতি নেটিভ স্টেটে মারাঠি প্রচুর এবং শাস্ত্রীয় সঙ্গীতের প্রতি তাঁদের অনুরাগ দক্ষিণ ভারতীয়দের সমান ছিল, বেশি বই তো কম নয়। ওইসব অঞ্চলে বড় বড় ওস্তাদরাও নাট্যসঙ্গীতকে ঘেন্না করতেন না, উল্টে নতুন পালা এলে আগ বাড়িয়ে যেতেন। ইন্দোরের রাজসভায় তখন গোয়ালিয়র ঘরানার প্রবাদপুরুষ ওস্তাদ হদ্দু খাঁর জামাই বন্দে আলি খাঁ সভাগায়ক বা কোর্ট মিউজিশিয়নের পদে। বীণাবাদক হিসেবে তাঁর নাম সারা ভারতবর্ষ জুড়ে তো ছিলই উপরন্তু বড়দরের গায়ক এবং বর্তমান কিরানা ঘরানার জনক হিসেবে ইনি সঙ্গীতের ইতিহাসে সুপরিচিত। ইনি নতুন নাটক 'রামরাজ্যবিয়োগ' দেখতে এসে ভাস্করের গলায় 'যো মম নয়ন চকোর ইন্দু' গান শুনে মুগ্ধ হয়ে তাঁর বন্ধু পাখোয়াজি নানা পাস্‌নেকে বলেন, "এ ছেলেটিকে তুমি যেখান থেকে পারো আমার কাছে নিয়ে এস। আমি এর গান আবার শুনতে চাই।" পরপর দুদিন খাঁ সাহেব নাটক দেখতে গেলেন এবং তারপর ভাস্করকে একদিন ধরে নিয়ে এসে বাড়িতে বসিয়ে বললেন, "বেটা, তুম্‌কো ম্যয়, সহি ঔর সচ্চা গানা সীখানা চাহ্‌তা হুঁ, সীখোগে?" উত্তরের অপেক্ষা না করেই চাকরকে পাঠিয়ে দিলেন বাজার থেকে চানা গুড় ও মিঠাই আনতে এবং তার পর ভাস্করের হাতে সুতো বেঁধে দিয়ে বললেন, "আজ সে তুম হমারে শাগীর্দ হো ঔর যো কুছ্‌ ইল্‌ম্‌ হমারে পাস হৈ বহ্‌ তুম্‌হারা হোগা।" ভাস্কর বালক হলেও বুঝলেন এ-ব্যাপার বিনে পয়সায় সারা যায় না। তিনি জোড়হস্তে বললেন, "হুজুর আপকো দক্ষিণা কাঁহা সে দুঙ্গা, ম্যয় তো বহত গরিব হুঁ, মেরা দস রূপেয়া তন্‌খা হ্যায়। বহ্‌ হর মহিনেমে ম্যয় ঘর ভেজতা হুঁ।" খাঁ সাহেব পকেটে হাত দিয়ে একটি তাঁবার পয়সা ও এক পাই ভাস্করের হাতে দিয়ে বললেন, "য়হ্‌ সওয়া পৈসা হমে দেও, য়হী হমারা দক্ষিণা হ্যায়।"

Scanned with CamScanner

(৫৮)

রাজীবের জীবনে হতাশার তালিকা বেশ লম্বা। ছোট-বড় মিলিয়ে অপ্রাপ্তি প্রচুর। তার অঙ্কগুলো বরাবরই একটুর জন্য মেলে না। কেন? রাজীব জানে না। লোকে বলে, জীবনচক্র গোল। তাই বৃত্তাকারে প্রাপ্তি-অপ্রাপ্তি, দুঃখ-সুখ সবই নাকি ঘুরে ঘুরে আসে। কিন্তু ওর চাকাটা মনে হয় সম্পূর্ণ গোল নয়। হয়তো পুরোটাই চতুর্ভুজ! তাই তার সব কিছুই একইভাবে বয়ে চলে।

যেমন, রাজীব হতে চেয়েছিল কলেজের অধ্যাপক। অন্তত লেকচারার। কিন্তু শেষ অবধি সে একজন প্রাথমিক শিক্ষক। যদিও তার পরিচিতরা এটা মানে যে রাজীব তাদের থেকে এগিয়ে থাকা একজন মানুষ। সে অবসরে কামু, কাফকা, সার্ত্র পড়ে। ক্লাসের ফাঁকে মুখের সামনে ধরে থাকে কোনও গাবদা লিটল ম্যাগাজিন। আর ক্লাসে পড়ায় পুং-লিঙ্গ, স্ত্রী-লিঙ্গ, বিশেষ্য, সর্বনাম।

রাজীব ভালবাসত মনামিকে। স্বপ্ন দেখত ওকে নিয়ে প্রেম করবে, ঘর করবে। ওর তুলতুলে হাত ধরে এদিক-ওদিক ঘুরে বেড়াবে। কিন্তু মনামি আঁচল উড়িয়ে চলে গেল স্টেটসে, এক মাঝবয়েসি ডাক্তারকে বিয়ে করে। আর রাজীব খবরের কাগজের 'পাত্র চাই'-তে আবেদন করে কোনওমতে জোটাল সুজাতাকে।

সুজাতা টেলিফোন অফিসের অপারেটর। চোখে চশমা, হার্টের সমস্যা, হাসে কম।

রাজীব বড় হয়েছিল উত্তর কলকাতার ভাড়াবাড়িতে। সেই বারো ঘর এক উঠোনের বাড়ি। টাইম কলের জল, বাথরুমে লাইন। যাত্রা পার্টির নায়ক থেকে বিপ্লবী—কে না থাকত সেখানে! ওরা একগাদা ভাইবোন গাদাগাদি করে থাকত একটা নোনাধরা ঘরে। মাথার উপর কাঠের বিমে ডি সি ফ্যানের ঘটাং-ঘটাং, লো-ভোল্টেজ বালব। চারপাশে রেডিও-হকার-ঝগড়ার শব্দতরঙ্গ। সূর্যের আলো সাড়ে তিন ইঞ্চির ফালি হয়ে পড়ত ঘরের মেঝেতে। সবুজের ছোঁয়া? তাও ছিল অল্পবিস্তর। কার্নিসের বটগাছ। আর একটা টবে ভাগাভাগি করে তুলসী, নয়নতারা। সবাই তাতে ধূপ গুঁজে প্রনাম করত।

(জ)

প্রথম দর্শনেই তিনি সামান্য সামনে ঝুঁকে বুকে হাত রেখে নম্র ভঙ্গিতে বললেন, 'আমার খুব অন্যায় হয়ে গেছে আপনাদের ব্রেকফাস্টের সময় এসে পড়েছি, আপনাদের সকলকে বিরক্ত করছি। আমি লজ্জিত।' একটু দম নিয়ে নিজের পরিচয় দিলেন, 'আমার নাম নির্মাল্য মুখোপাধ্যায়। আমি বৃদ্ধাবাস থেকে আসছি।'

বৃদ্ধাবাস শুনে চকিত হল দেবাশিস। কিন্তু পরক্ষণেই সচেতন হয়ে প্রশ্ন রাখল, 'বলুন, আপনার কী চাই?'

ওর প্রশ্নকে গুরুত্ব না দিয়ে মুখে হালকা হাসি ফুটিয়ে নির্মাল্যবাবু বললেন, 'আগে একটু জল খাওয়াবেন? অনেকক্ষণ ধরে হাঁটছি, গলা শুকিয়ে গেছে।'

কাজের মেয়ে টিংকুর বয়স কম বলে ওর চোখে অনেক কৌতূহল জমা থাকে। সেই দৃষ্টি নিয়ে ও দাঁড়িয়েছিল দরজার পাশে। দেবাশিস ওকে নির্দেশ দিল, 'এক গ্লাস জল নিয়ে আয় টিংকু।'

নির্মাল্যবাবু দেবাশিসের মুখের দিকে তাকিয়ে মাথা নামিয়ে নিলেন এমন ভাবে যা দেখে মনে হয় তিনি যা খুঁজছিলেন তা পেলেন না। নিরাশ হয়েছেন।

দেবাশিস চিন্তা করে ভদ্রলোক নিশ্চয় কোনও প্রত্যাশা নিয়ে বৃদ্ধাবাস থেকে এসেছেন, খুব সম্ভবত ডোনেশন চাইবেন। সেক্ষেত্রে আগ বাড়িয়ে আন্তরিকতা দেখাতে যাওয়ার কোনও অর্থ হয় না। চাওয়ার পরিমাণ তখন বেড়ে যাবে।

টিংকু জল এনে টেবিলে রাখল। নির্মাল্যবাবু গ্লাসটি হাতে তুলে ঠোঁটে ছুঁইয়ে মাত্র দু'-এক চুমুক দিয়ে রেখে দিলেন। বোঝা গেল, তিনি ততখানি তৃষ্ণার্ত নন।

'আপনি আমার কাছে কেন এসেছেন? সঠিক জানাবেন?' দেবাশিস প্রশ্নে সাবধানতা বজায় রাখে।

নির্মাল্যবাবু ওর কথা শুনছিলেন কিন্তু তাঁর দৃষ্টি নিবদ্ধ ছিল ভিতরের দরজার দিকে। যেখানে পর্দার আড়ালে কিচেন থেকে টুংটাং শব্দ আসছিল তার সঙ্গে তিলোত্তমার চুড়ির নরম আওয়াজ। মনে হয় নির্মাল্যবাবু ওদিকেই কান পেতে রেখেছেন। ওখানেই বেশি মনোযোগ। তাই দেবাশিসের প্রশ্নের উত্তরে খুবই নিস্পৃহ ভাবে তিনি জবাব দিলেন, 'সে রকম কিছু নয়। আমার বলার কোনও ব্যস্ততা নেই।' তবে দেবাশিসকে সামান্য বিস্মিত করে সহজ স্বরে তিনি জানতে চাইলেন, 'আমার এইভাবে এসে পড়াতে আপনি কী খুব অস্বস্তি বোধ করছেন?'

নির্মাল্যবাবুর জিজ্ঞাসায় স্বভাবতই দেবাশিস বিচলিত। তবে মনের কথা সোজাসুজি প্রকাশ করাও যায় না। কী উত্তর দেবে গুছিয়ে বলার জন্যে যখন সে একটু সময়ের প্রয়োজনীয়তা, বোধ করছিল সেই সময় তিলোত্তমা ট্রে-তে দু'কাপ চা তার সঙ্গে কিছু বিস্কুট নিয়ে ভিতরে এল। দেবাশিস সাময়িকভাবে রেহাই পেয়ে যায়। এক হাতে ট্রে অন্য হাত কপালে ছুঁইয়ে আলতো নমস্কার জানিয়ে হাসিমুখে তিলোত্তমা ওঁর সামনে ট্রে নামিয়ে রাখল, 'একটু চা—নিন।' দেবাশিসের দিকে চোখ তুলে কণ্ঠে মধুরতা বজায় রেখে বলল, 'তোমারও চা রইল। কথাবার্তা বলো। আমি ভিতরে রয়েছি।'

নির্মাল্যবাবু তিলোত্তমার উপস্থিতিতে প্রসন্ন হয়ে উঠলেন। কথার মধ্যে বজায় রইল সেই প্রফুল্লতা, 'তোমার চায়ের কাপও এখানে নিয়ে এসো মা। একসঙ্গে তোমাদের দু'জনের সঙ্গেই দুটো কথা বলি।'

অনুরোধ উপেক্ষা করতে না পেরে তিলোত্তমা থেমে যায়। এক মুহূর্ত চিন্তা করল, 'ঠিক আছে, আমি আসছি।'

দেবাশিস দূরত্ব বজায় রেখে জবাবদিহি করে, 'একসঙ্গে গল্প করার সময় এখন খুব কম। সপ্তাহে একটি মাত্র ছুটির দিনে অনেক কাজ থাকে। সপ্তাহভর জমে থাকা কাজকর্ম এক দিনে সেরে নিতে হয়।'

নির্মাল্যবাবু মাথা হেলিয়ে সমর্থন করলেন ওর যুক্তি। কিন্তু মন্তব্যহীন থাকলেন। ইতিমধ্যে চায়ের কাপ নিয়ে তিলোত্তমা বাইরের ঘরে এসেছে। ওর দিকে দৃষ্টি রেখে তিনি অপরাধ স্বীকারের মতো করে বললেন, 'তুমি কিছু মনে কোরো না মা, অজান্তে আমার অন্যায় হয়ে গেছে। তোমাকে এভাবে সরাসরি তুমি বলা বোধহয় ঠিক হয়নি।' একই সঙ্গে কৈফিয়তটুকু জুড়ে দেন, 'তবে সত্যি কথা বলতে তুমি আমার মেয়ের বয়সি হয়তো, সেই সম্পর্কের টানেই কোথায় যেন মিল পাই। যে কারণে আমার মুখ দিয়ে "তুমি" বেরিয়ে এসেছে।' তিলোত্তমা উত্তর দেওয়ার আগেই নরম কণ্ঠে জিজ্ঞাসা রাখলেন, 'যাক, এখন বলো তোমাকে কী নামে ডাকব?'

'আমি তিলোত্তমা। তবে আপনার তুমি ডাকে আমি কিছু মনে করিনি। বরং এভাবে যে আপনি আমাদের আপন করে নিয়েছেন এইটুকু বেশ ভাল লেগেছে।' তিলোত্তমা বৃদ্ধকে স্বস্তি দিতে চাইল।

ভাললাগার প্রতিক্রিয়া জানাতে ওর মুখ কোমল হয়ে ওঠে।

দেবাশিসের মনে হয় তিলোত্তমার ভুল হচ্ছে। অজ্ঞাতপরিচয় কোনও মানুষের সঙ্গে এত সহজে চলে যাওয়া উচিত নয়। তাছাড়া ভদ্রলোক কী অভিপ্রায়ে এসেছেন সে বিষয়টি এখনও অজানা।

'আমার মেয়ের নাম মৌলি। আমার মেয়ে-জামাই থাকে গুজরাতের জামনগরে। দশ বছর হল বিয়ে হয়েছে। ওদের একটি আট বছরের ছেলে আছে। আমার নাতি। সে ক্লাস থ্রি-তে পড়ে।' নিজের কথা শেষ করে নির্মাল্যবাবু পূর্ণদৃষ্টিতে তিলোত্তমার দিকে তাকালেন, 'তোমার ছেলেমেয়ে ক'জন?'

—x—

Scanned with CamScanner